प्रस्तुतकर्ता

सन्तोष कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर – संस्कृत

राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी वाराणसी

विषय- संस्कृत

नई शिक्षा नीति - 2020

बी.ए. - प्रथम सेमेस्टर(मेजर)

इकाई –1/5

शीर्षक - संस्कृत वांङ्गमय में ज्ञान विज्ञान एवं राष्ट्र गौरव

उपशीर्षक- लौकिक वाङ्गमय में राष्ट्र गौरव

स्वघोषणा

(disclaimer/ self-Declaration)

यह सामग्री विशेष रुप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है।आर्थिक /वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णता प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेंट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

" The content is exclusively meant for academic purpose and for enhancing teaching and learning. Any other used for economic / commercial purpose is strictly prohibited the users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted and advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge."

भूगोल एवं खगोल

ब्रम्हांड, पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि, आकाश, सूर्य, नक्षत्र तथा राशियों का विवरण वेदों पुराणों एवं लौकिक ग्रंथों में मिलता है । विष्णुधर्मोत्तर पुराण में भौतिक और मानव भूगोल पर 6 अध्याय हैं। वाराह मिहिर के वृहतसंहिता ने ग्रहों की चाल, वर्षा,बादलों, पानी के निर्माण का विवेचन किया है। गणितज्ञ खगोल शास्त्री आर्यभट्ट ने अपने ग्रंथ आर्यभटीयम में पृथ्वी की परिधि का सही अनुमान किया है ।इनके अनुसार 24835 मील है जो वास्तविक से 0.2% छोटी है ।

गणित

गणित में भारतीय हमेशा से सर्वोत्कृष्ट रहे हैं भारतीयों से गणित अरबों ने सीखी अरबों से भारतीय गणित का ज्ञान यूरोप तक पहुंचा ।गणित ज्यामिति का ज्ञान प्रचुर मात्रा में संस्कृत साहित्य में उपलब्ध है। आवश्यकता है उसे सहेजने की जिसमें विभिन्न गणितीय समीकरण त्रिभुज एवं चतुर्भुज के क्षेत्रफल, पाई का मान, रेखा,वृत्त आदि से सम्बंधित ज्ञान निहित है।

ज्योतिष शास्त्र

ज्योतिष शास्त्र को वेद का नेत्र कहा जाता है। प्रमुख आचार्य लगध ने ज्योतिष शास्त्र पर दो ग्रंथ लिखे हैं आर्चज्योतिष और यज्ञासु ज्योतिष ।पहला ग्रंथ

ऋग्वेद से संबंधित है इसमें 362 श्लोक हैं दूसरा यजुर्वेद से संबंधित है इसमें 432 श्लोक हैं।

वास्तु शास्त्र

वास्तु शब्द का उद्भव संस्कृत के वास से हुआ है वास का अर्थ होता है रहने का स्थान संस्कृत में वास्तु शास्त्र घर, प्रसाद, भवन अथवा मंदिर निर्माण का प्राचीन भारतीय विज्ञान है। वास्तु शास्त्र का ज्ञाता विश्वकर्मा को कहा जाता है। जिन वस्तुओं का हमारे दैनिक जीवन में उपयोग होता है उन वस्तुओं को जिस प्रकार से रखा जाए वह भी वास्तु है। इसमें चारों दिशाओं और उसके चार कोने तथा ऊपर और नीचे को मिलाकर 10 दिशाएं स्वीकार की गई है। इन्हीं के अनुसार किस दिशा में क्या होना चाहिए का विशद वर्णन है।

आयुर्वेद

विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा प्रणाली आयुर्वेद है। यह चिकित्सा विज्ञान, कला, दर्शन का मिश्रण है इसका सम्बंध मानव शरीर को निरोग रखने से है। इसमें तीन दोषों वात, पित्त, कफ के असंतुलन को रोग का कारण माना गया है। आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद मानते हैं यह चिकित्सा पद्धति देवताओं द्वारा धरती के महान आचार्यों को दी गई आदि आचार्य अश्विनी कुमार माने जाते हैं ।इंद्र ने यह विद्या अश्विनी कुमारों को दी धनवंतरी को भी इंद्र ने सिखाया अत्रि और भारद्वाज को इस शास्त्र का प्रवर्तक माना जाता है। आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथ है चरक कृत चरक संहिता सुश्रुत कृत सुश्रुत संहिता तथा वाग्भट कृत अष्टांग हृदय।

अर्थशास्त्र

कौटिल्य द्वारा रचित संस्कृत का एकमात्र ग्रंथ है इसमें राजव्यवस्था, कृषि, न्याय, राजनीति आदि के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है ।यह राज्य प्रबंधन विषयक प्राचीन ग्रंथ है । वैदिक समाज में ग्राम सबसे छोटी राजनीतिक एवं सामाजिक इकाई थी इन युगों में आर्थिक सामाजिक राजनीतिक अस्थिरता बनी रही आर्य जनों में संयुक्त परिवार की प्रथा थी वह गाय और अन्य पशुओं के पालन से अपनी जीविका चलाते थे ऋग्वेद काल में कृषि भी होती थी।

रामायण महाभारत काल में अर्थव्यवस्था विकसित रूप धारण कर चुकी थी इसका वर्णन महाकाव्यों के द्वारा विदित होता है। **विज्ञान** में दो शब्द हैं विशेष और ज्ञान निहित है । प्रकृति में उपस्थित पदार्थ और वस्तुओं के क्रमबद्ध अध्ययन से जो ज्ञान प्राप्त होता है उस ज्ञान के आधार पर वस्तुओं का व्यवहार गुण तथा प्रकृति का पता लगाना विज्ञान कहलाता है ।भास्कराचार्य ने अपनी ग्रंथ में ग्रहों की गति, पृथ्वी ,गुरुत्वाकर्षण शक्ति की खोज द्वारा यह सिद्ध किया कि पृथ्वी आकाशीय पदार्थों को विशिष्ट शक्ति से अपनी तरफ खींचने के कारण पिंड पृथ्वी पर गिर जाते हैं। वाराहमिहिर, आर्यभट्ट आदि अनेक वैज्ञानिक हुए जिन्होंने भारत के गौरव को बढ़ाया।

भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र लिखा। नाट्यशास्त्र भारतीय नाट्यम और काव्यशास्त्र का आदि ग्रंथ है। वैदिक संगीत की अवस्था का प्रारंभ सामवेद के मंत्रों के उच्चारण से देवताओं की पूजा और अर्चना द्वारा की जाती थी। सामवेद को संगीत का जनक माना जाता है। गायन, वादन, नृत्य तीनों कलाओं का समवेत समावेश संगीत में माना गया है। वेदों में वाण,वीणा और कर्करि आदि वाद्यों का उल्लेख मिलता है। संगीत के विभिन्न पहलुओं का वर्णन सामवेद से मिलता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास डॉ कपिल देव द्विवेदी।**

2- संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास राधावल्लभ त्रिपाठी।

3- संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास विनय कुमार राय ।